International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 40-41

शेखर जोशी की कथा साहित्य में सामाजिक लोक-जीवन

राजेन्द्र सिंह बिष्ट

शोधछात्र, हिंदी विभाग, राजकीय स्ना0 महाविद्यालय, बागेश्वर, उत्तराखण्ड, भारत।

सरांश

शेखर जोशी का नाम हिंदी कहानी साहित्य के विकास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इनके कहानी के कथ्य और शिल्प ने उन्हें समकालीन कथाकारों के बीच पर्याप्त सम्मान प्रदान किया है। इनकी कहानियों में भी कुमाऊँ के आंचलिक जीवन से लेकर छोटे–बड़े महानगरीय समाजिक लोक जीवन का चित्रण सर्वाधिक हुआ हैं, किन्तु आंचलिक जीवन और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के मध्यम एवं निम्न वर्गीय जीवन संदर्भों के निरूपण की दृष्टि से शेखर जोशी की कहानी साहित्य का अत्यन्त महत्व है। शेखर जोशी के कथा–साहित्य में उत्तराखण्ड के पर्वतीय अंचल में परिव्याप्त स्थानीय सामाजिक लोक–जीवन का कुशलतापूर्वक चित्रांकन हुआ है। उनकी कहानियों के शीर्षक भी स्थानीय नामों, स्थानों अथवा लोकग्राह्य संज्ञाओं की व्यंजना करते हैं। वस्तुतः शेखर जोशी की कहानियाँ सामाजिक जीवन की विसंगतियों को बड़ी सहजता एवं सरलता से पाठक को परिचित कराती हैं तथा एक बड़ा सवाल अथवा प्रश्न छोड़ देती हैं। इन्हीं प्रश्नो की बानगी प्रस्तुत शोध–पत्र में दिखाई देती है।

मूल शब्द: पीढ़ियों का संघर्ष, पुरानी पीढ़ी की विवशता, अकेलापन, सात्विक प्रेम।

प्रस्तावना

शेखर जोशी की कहानियों में भावनात्मक घनत्व, मध्यम वर्गीय प्रदर्शन–प्रियता और उससे उत्पन्न संकट, पीढ़ियों का संघर्ष, पुरानी पीढ़ी की विवशता, अकेलापन, सात्विक प्रेम, दलितों की सामाजिक जागृति, लोक रूढ़ियों एवं लोक विश्वासों से उत्पन्न पीढ़ा, श्रमिकों का शोषण, अफसरों की अमानवीयता एवं तानाशाही व्यवहार आदि के साफ–सुथरे चित्र अंकित है। शेखर जोशी द्वारा रचित 'मेटल' कहानी में उच्च वर्गीय स्वार्थ लिप्सा का चित्रण हुआ है। इस कहानी का मिस्त्री अपने अधिकारी की स्वार्थ लिप्सा का उद्घाटन करता हुआ व्यक्त होता है। साहब के द्वारा मिस्त्री पर चोरी का इल्जाम लगाए जाने पर वह अपने साहब की स्वार्थ लिप्सा को चित्रित करता हैः ''चोर मैं हूँ कि आप हैं? यह थैला मेरा बन रहा है कि आपका, यह अच्छा हुआ कि, कोई बक्स, पलंग, फूलदान या ऐसी चीजें जो बी0ओ0 साहब के लिए बनी थी, वहाँ नहीं थी वरना वह उन सबको अपने सिर पर लाद कर उनके पीछे–पीछे भागता।''[1]

शेखर जोशी की 'बदबू' कहानी कल कारखानों के मालिकों एवं अफसरों की श्रमिक समाज पर तानाशाही एवं षडयंत्रों का निरूपण हुआ है। कारखानों में सभी अफसर सिगरेट पीते घुमते है किन्तु श्रमिकों को बीड़ी पीने के मना किया जाता है। इसके अतिरिक्त कारखाने से बाहर निकलते समय कई बार श्रमिकों को टटोला जाता है ओर टटोलने के बहाने श्रमिकों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। एक श्रमिक अफसरों की इस अमानवीय के प्रति शेष व्यक्त करता चित्रित हुआ है; ''सालों को शक रहता है कि हम टांगों के साथ कुछ बाँधे ले जा रहे हैं। इसीलिए अब यह उछल–कूद का खेल कराने लगे है।'' ''इनका बस चले तो ये गेट तक हमारी नागा साधुओं की सी बारात बनाकर भेजा करें।'' दूसरे ने उसकी बात का समर्थन किया। 'खीर खाये' बाह्मणी, फाँसी चढ़े शेख नहीं देखते यहाँ आकर देख। छोटे साहब की गाड़ी के पिस्टन अन्दर बदले गए है। खुद मैंने अपनी आँखों से देखा।''[2] शेखर जोशी कृत 'बच्चे का सपना' कहानी में समाज द्वारा किसी का समान छूट जाने पर उसे न लौटाना समाज भ्रष्ट व्यक्ति को उजागर करता है। इस कहानी प्रमुख पात्र आर्थिक दबाव के कारण ही चार पैसे की बचत के लिए जिस मितव्ययता का परिचय देता है। उससे समाज की भ्रष्ट का आचरण व्यक्त होता है। उदाहरण उद्धृत हैः ''महीने के शुरू में कैंटीन की भीड़ अधिक लगी रहती हैं, लेकिन खुले बाजार की अपेक्षा चार पैसे की बचत के लिहाज से मैंने देर तक लाइन में प्रतीक्षा करने के बाद प्रायः सभी आवश्यक चीजें तो ली थीं, पुरानी पैंट से काटकर बनाया गया झोला वनस्पति घी का डिब्बें का भार शायद झेल न सके यह सोचकर मैंने उसे अलग से रख लिया था..... जिसमें कभी–कभार मिल जाने वाली एक–दो नहीं सैकड़ों टाफियां रही होगी।''[3] किन्तु ट्रेन में समान का थैला छूटने के बाद जिस कठिनाई का अनुभव हुआ उसने सोचा था कि कोई थैला जरूर लौटा देगा।

शेखर जोशी की 'बिडुवा' कहानी में प्रमुख पात्र ठाकुर के लड़के का विवाह होना है। उनका छोटा भाई दिग्विजय अपने भतीजे के विवाह में समाज में दिखावे के लिए विडियो रील बनाना चाहता है, किन्तु ठाकुर इस फिजूल खर्ची मानते है। शेखर जोशी की 'व्यतीत' कहानी का वृद्ध चरित्र जब शहर से अपने गाँव जाने की इच्छा व्यक्त करता है, उस वृद्ध व्यक्ति पुत्र समाज, लोक–लाज की बात कहकर उसकी बातों का विरोध करता चित्रित होता है; ''आदमी कुछ सोच–समझ कर बात करनी चाहिए। रमेश के स्वर में झल्लाहट भर गई थी, शहर के एक मुहल्ले से दुसरे मुहल्ले में भेंट–मुलाकात करने की बात तो हर बार अगले महीने टल जाती है। फिर इतने वर्षों से छूटा हुआ घर है टूट–फूट मरम्मत–सफाई, इतना लम्बा परिवार लेकर जाना, नाते रिश्तेदार, लेन–देन सभी कुछ है कभी इस लायक स्थिति हुई तो जाएँगे ही।''[4]

शेखर जोशी की 'दाज्यू' एक ही क्षेत्र के रहने वाले भिन्न–भिन्न वर्गीय जगदीश बाबू और मदन के परस्पर संवादों के द्वारा समाज में लोभ को चित्रित करता है, इस कहानी में बात पर (दाज्यू) भाई साहब कहने पर डाँटना, उससे कहना की चाय के लिए तो पूछता नहीं है। उदाहरण दृष्टव्य हैः ''चाय नहीं लेकिन दाज्यू–दाज्यू क्या चिल्लाते रहते हो दिन–रात। किसी की 'प्रेस्टिज' का ख्याल भी नहीं है तुझे?''[5] शेखर जोशी द्वारा 'संवादहीन' कहानी में नवयुवक लोगों का शहर की ओर पलायन अपने बच्चों को साथ ले जाना। वृद्ध जो घर–गांव में उनकी देख–रेख वाला कोई नहीं है, समाज में

पलायन की व्यथा कहती विधवा ताई : ''बहू–बेटे गाँव छोड़कर शहरों के होकर रह गए, अपनी अकेली जान के लिए दो जून का चूल्हा फूँक लेती, व्रत–उपहास के बहाने चौका–चूल्हा टाल जाती। पेट की समस्या उनके लिए कभी समस्या नहीं रही, पर सूने घर की भाय–भायं जैसे उन्हें काटने को दौड़ती थी।''[6]

शेखर जोशी 'किं करोमि जर्नादन' कहानी में बहू द्वारा ससुर की उपेक्षा, अपनों से बड़ों का सम्मान न करना चित्रित किया है। इस कहानी के पात्र नित्या नन्दज्यू और उनकी पत्नी सारी की सारी पीड़ा अपने बेटों और बहुओं की घोर उपेक्षा से उत्पन्न हुई है। इनकी बड़ी बहू अपने ससुर पर आक्षेप करने में किसी प्रकार का संकोच नहीं करती; ''हाँ बड़े धर्मात्मा है। सर्दियों में एक दिन भी नहाया नहीं। बंडी पहन कर चौंके में भात खाने बैठ जाते थे। आज एक छोटी सी बात के लिए उनका धरम बिगड़ जाएगा।''[7] शेखर जोशी की 'तर्पण' कहानी में समाज में फैले अंधविश्वास को चित्रित किया है फिर उसकी सच्चाई को व्यक्त किया है। तारी की भाभी की मृत्यु के उपरान्त ग्रामीण महिलाओं के द्वारा उसे रात्री में देखने की बात कहना निश्चित ही अंधविश्वास को प्रकट करता है उदाहरण उद्धृत है; ''क्या जो देखा तारी! खूब झलर–फलर हो रही है– बाजे–गाजे बज रहे थे– बहु–बेटियाँ गा रही थी। अचानक एक बहू ने आकर मेरे पैर छुए–बरेली का काम काजी घाघरा–ओढ़नी, घेरेदार नथ, मैं पहचान ही नहीं पाई। अरे, यह तो रामदत्त की बहू है, क्या तो रूप था। एक दम गौरी–पार्वती–सा।''[8]

शेखर जोशी द्वारा रचित 'कोसी का घटवार' कहानी नारी पात्र बाल विधवा लछमा पति के मृत्यु पश्चात अत्यन्त गरीबी से जीवन यापन करती है। समाज उसकी मद्दत के लिए हाथ नहीं बढ़ाता और भी ताना मारता है। आर्थिक कठिनाइयों के कारण वह एकमात्र बेटे को भरपेट रोटी खिला पाने में असमर्थ चित्रित होती है। इस कहानी में गुसाई सिंह, लछमा और उसके पुत्र के परस्पर संवादों से लछमा की विवशता और आर्थिक कठिनाइयों का उद्घाटन उद्धृत है, जिसमें उसका भूखा बेटा घर की विवशता के साफ–साफ चित्र अंकित होते हुए दिखाई देते है; ''मैं तो अपने टैम से ही खाऊँगा। यह तो बच्चे के लिए 'स्पष्ट कहने में उसे झिझक महसूस हो रही थी, जैसे बच्चे के संबद्ध में चिंतित होने की उसकी चेष्टा अनधिकार हो। 'न–न जी। वह तो अभी घर से खाकर ही आ रहा हैं। मैं रोटियाँ बनाकर रख आई थी। 'अ ऽ ऽ यों ही कहती है। कहाँ रखी थीं रोटियां घर में बच्चे ने रूआंसी आवाज में वास्तविक स्थिति स्पष्ट कर दी। रोटियों को देखकर तो उसका संयम ढीला पड़ गया।''[9] समाज में कोई मद्दत करता भी है उसके पीछे उसका स्वार्थ छीपा रहता है। विधवा लछमा व गुसाई सिंह के प्रेम संबंधों की गंध आती है। शेखर जोशी की कहानियों में व्यक्त निम्न वर्गीय जीवन की अनिश्चितता और उससे उत्पन्न संत्रास के अत्यन्त साफ–सुथरे चित्र है। इनकी 'बोझ' कहानी का कथा चरित्र अपनी अनिश्चित जीवन से भली–भाँति परिचित है। उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने पर समाज द्वारा उसका शोषण हो रहा हैं। वह यह जानने के पश्चात भी शोषित होता जाता हैं; ''होटल की बेयरागिरी से लेकर घरेलू नौकरी तक और हर जगह उसे यही अनुभव हुआ था कि उसे आश्रय देने वाले किसी भी रूप में भीम सिंह प्रधान मोती राम जी या सैंलानी साहबों से भिन्न नहीं है।''[10]

शेखर जोशी की कहानियों में सामाजिक विद्वेष के स्वर मुखरित हुए है। इनकी 'समर्पण' कहानी में दलित वर्ग की सामाजिक जागृति से सवर्णों के मन में सामाजिक विद्वेष के भाव व्यक्त होते है इसलिए स्वर्ण बुजुर्गों के मन में एक प्रकार की घबराहट अथवा बैचेनी व्यक्त होती दिखाई देती है; ''मालकिनों और बाबुओं के लिए शिल्पकारों का विद्रोह साधारण सी हंसी–मजाक की घटना हुई हो, लेकिन बड़े–बड़े मालिक लोगों का मन इस परिवर्तन से सहसा आतंकित हो उठा।''[11] इनकी तर्पण कहानी में हिन्दू समाज के अनुरूप पुरूष पात्र तारी अपने भाभी के बारहवें दिन तिलकुश के द्वारा तर्पण देता चित्रित होता है। शेखर जोशी की 'समर्पण' कहानी में भी जहाँ एक और पिछड़े समाज की धार्मिक एवं सांस्कृतिक चेतना का निरूपण हुआ है। वहीं पिछड़े समाज के अंधविश्वास एवं रूढिग्रस्तता भी चित्रित हुआ है। इसीलिए तो दलित वर्ग से संबद्ध वृद्ध चरित्र अपनी दलित बिरादरी के प्रति सवर्णों के आचार व्यवहार को आत्मसाथ करने पर अपने रूढ़िग्रस्त मानसिकता को व्यक्त करते चित्रित हुए हैः ''ऐसे जप–तप, नियम–धरम वाले मालिक लोगों की बराबरी करेंगे, अब हमारे भाई बिरादर! शरीर पर के फटे–चिथड़े को छोड़कर दूसरा चिथड़ा पास में नहीं। माई–बाप के मरने पर जन्म में एक बार नहाने वाले! इससे सपरेगा यह ढोंग।''[12] भारतीय समाज में व्याप्त रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं परम्परा के प्रति आग्रह, नए मूल्यों, मूल्यहीनता, अनैतिकता, आर्थिक शोषण सहित अनेक प्रकार की अन्य सामाजिक विकृतियों पर कड़ा प्रहार हुआ है।

संदर्भ सूची ग्रंथ

1. शेखर जोशी, मेंटल (प्रतिनिधि कहानियाँ) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1944, पृ0129
2. शेखर जोशी, बदबू (प्रतिनिधि कहानियाँ) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1944,पृ0134
3. शेखर जोशी, बच्चे का सपना (नौरंगी बिमार हैं) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ08
4. शेखर जोशी, व्यतीत (प्रतिनिधि कहानियाँ) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1944,पृ032
5. शेखर जोशी, दाज्यू (प्रतिनिधि कहानियाँ) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1944,पृ009
6. शेखर जोशी, संवादहीन (नौरंगी बिमार हैं) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, पृ045
7. शेखर जोशी, किं करोमि जर्नादन (प्रतिनिधि कहानियाँ)राजकमल प्रकाशन,दिल्ली,1944,पृ011
8. शेखर जोशी, तर्पण (प्रतिनिधि कहानियाँ) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1944,पृ070
9. शेखर जोशी, कोसी का घटवार (प्रतिनिधि कहानियाँ)राजकमल प्रकाशन,दिल्ली,1944,पृ0111
10. शेखर जोशी, बोझ (प्रतिनिधि कहानियाँ) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1944,पृ046
11. शेखर जोशी, समर्पण (प्रतिनिधि कहानियाँ) राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1944,पृ041
12. वही,पृ036